सामन्तवाद

सामन्त शब्द का उल्लेख अर्थशास्त्र में स्वतन्त्र पड़ोसी के लिए किया गया है। सर्वप्रथम अश्वघोष द्वारा रचित बुद्धचरित में सामन्त का प्रयोग जागीरदार के लिए किया गया। गुप्तकाल में इसी अर्थ के साथ इसका प्रयोग जारी रहा।

सामन्तवाद का अंकुरण शक-कुषाण काल में हुआ। शक सम्राट षाहीनुषाहि कहे जाते थे जिनकी अधीनता में कई सामन्त (षाही) होते थे। कुषाण सम्राटों की राजाधिराज की उपाधि भी सामन्तवादी व्यवस्था की सूचक है। कालान्तर में गुप्त शासकों द्वारा धारण की गयी महाराजाधिराज, महामंडलेश्वर, परम भागवत आदि उपाधियाँ इसी का सूचक हैं।

भारत में सामन्तवाद के उद्भव तथा विकास के लिए राजनीतिक, सामाजिक, धार्मिक तथा आर्थिक परिस्थितियों ने महत्वपूर्ण आधार प्रदान किया।
→ बाह्य आक्रमणों से केन्द्रीय सत्ता दुर्बल हो गयी। केन्द्रीय शक्ति की निर्बलता ने समाज में प्रभावशाली व्यक्तियों का ऐसा वर्ग तैयार किया जिन पर स्थानीय सुरक्षा का भार आ पड़ा। समाज भी अपनी जान-माल की सुरक्षा के लिए उनकी ओर उन्मुख हुआ।

गुप्तोत्तर काल में व्यापार वाणिज्य के ह्रास का संकेत प्राप्त होता है। 600-700 ई० के मध्य हमें व्यापारिक संघों की मुहरें नहीं मिलती तथा सिक्के मिश्रित धातु एवं भद्दे आकार प्रकार के मिलते हैं। इससे सूचित होता है कि इस समय वाणिज्य पर आधारित अर्थव्यवस्था का पतन हो गया था। ह्वेनसांग के विवरण से पता चलता है कि उत्तर भारत के नगर वीरान हो गए थे। नगरीय जीवन के ह्रास के फलस्वरूप अर्थव्यवस्था मुख्यतः भूमि और कृषि पर निर्भर हो गयी। इस प्रकार समाज में भू-सम्पन्न कुलीन वर्ग का उद्भव हुआ।

Scanned with CamScanner

सामन्तवाद के उदय में सबसे प्रमुख योगदान शासकों द्वारा प्रदत्त भूमिदान तथा ग्राम दान है। ब्राह्मणों को दी जाने वाली भूमि अग्रहार या ब्रह्मदेय कहलाती थी।

सर्वप्रथम भूमिदान का उल्लेख शक-सातवाहन लेखों में प्रथम शताब्दी ई० पूर्व में मिलता है। शक शासक उषावदात के लेखों में उसके द्वारा दिये गये ग्राम एवं भूमिदान की चर्चा है।

सातवाहन नरेश गौतमीपुत्र सातकर्णी के एक लेख से पता चलता है कि उसने बौद्ध भिक्षुओं को ग्राम दान में दिये थे।

राजा भूमिदान के साथ-साथ उन्हें प्रशासन एवं न्याय की भी जिम्मेदारी प्रदान करता था।

हर्षकाल में यह प्रथा सामान्य हो गयी तथा अधिकारियों, सेनापतियों आदि को भूमि दान में दी जाने लगी।

→ मनुस्मृति में राजस्व अधिकारियों को भूमिदान के रूप में वेतन देने की संस्तुति की गयी है।

अतः कालान्तर में भूमिदान की यह प्रथा प्रशासनिक संचालन में अति महत्वपूर्ण होने लगी तथा केंद्रीय सत्ता की निर्भरता विशेषकर सैन्य मामलों में सामन्तों (भूमिदान प्राप्त कर्ताओं) पर निर्भर होने लगी जो समय-समय पर राजा को उपहार भेंट भी दिया करते थे। चूंकि भूदान के साथ राजस्व वसूली एवं प्रशासनिक अधिकार भी हस्तांतरित किये जाने लगे अतः उत्तर प्राचीन काल के भारत में ग्रामीण शोषण की नवीन व्यवस्था ने जन्म लिया फलस्वरूप अधिशेष के चालित संकेंद्रण ने व्यापार वाणिज्य को नष्ट किया, मुद्रा का प्रचलन बाधित हुआ तथा बंद अर्थव्यवस्था उभरी जिसे इतिहासकारों ने अंधकार युग की संज्ञा दी है।

Scanned with CamScanner